



विभाग - १ : सहजानंद चरित्र - द्वितीय संस्करण, मार्च - २००९

प्र. १ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । ( ९ )

१. "आप सभी ने कुछ वर्षों तक धीरज रखी है, अब कुछ और समय धैर्य रखना है ।"

कौन कहता है ? ..... किसको कहता है ? .....

कब कहता है ? .....

.....

२. "पापी या पुण्यशाली में उन्हें कोई भेद नहीं होते ।"

३. "हमारे लिए भिक्षा ले आईए ।"

प्र. २ निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए । ( दो से तीन पंक्ति में ) ( ६ )

१. श्रीहरि ने अपनी बीमारी को दरकिनार किया और राजकोट के लिए प्रस्थान किया ।

.....

.....

.....

२. श्रीहरि बिना शिष्य के रह गये ।

३. श्रीहरि के हरिभक्तों को देखकर बिशप साहब विस्मित रह गए ।

प्र. ३ निम्नलिखित किन्हीं एक प्रसंग के बारे में १५ पंक्ति में टूकनोंथ लिखिए । ( वर्णनात्मक ) ( ५ )

१. भगवान की गद्दी २. वरताल में लक्ष्मीनारायण देव की प्रतिष्ठा ३. गाजर मेरी बैरन

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्र. ४ निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए । (५)

१. श्रीहरि के देह का अग्नि संस्कार कहाँ किया गया ?

.....  
.....

२. किस की पत्नी को श्रीहरि ने दृष्टि का दान दिया ?

३. समाधि में लोग योग के कितने आसन करते थे ?

४. पकाया हुआ अन्न लेने के लिए परमहंसों क्यों मन ही मन विरोध कर रहे थे ?

५. श्रीहरि ने मन्दिरों में महन्त की नियुक्ति करने का निर्णय क्यों लिया ?

प्र. ५ निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) का निशान करें । (४)

सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहीं दिया जाएगा ।

१. नरनारायण देव की प्रतिष्ठा ।

(१)  सर ज्हेन माल्कम ने श्रीहरि को मन्दिर बनवाने की बिनती की ।

(२)  संवत् १८७८ के फाल्गुन शुक्ला तृतीया - मूर्ति प्रतिष्ठा ।

(३)  श्रीहरि ने नवावास में पाठकवाड़ी नामक जगह पसंद की ।

(४)  लक्ष्मीचंद सेठने ब्रह्मभोज के लिए नौ हजार रुपए दिए ।

२. वेदान्ताचार्य की पराजय

(१)  वेदान्ताचार्य दक्षिण भारत का विद्वान ब्राह्मण था ।

(२)  नित्यानंद स्वामी ने बारह महावाक्यों का अर्थ किया ।

(३)  श्रीहरि ने दो सौ रुपये तथा वस्त्र दिया ।

(४)  नड़ियाद जाकर श्रीहरि तथा सम्प्रदाय की निन्दा करने लगा ।

प्र. ६ निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए । (४)

१. श्रीहरि ने ..... के हरिभक्तों को ..... दिया ।

२. एक ..... के लड़के ने ..... के बाल प्रसादी के रूप में देने के लिए नाई को कहा था ।

३. वासुदेवनारायण के मंदिर में सभा में अन्तरिक्ष में ..... और ..... की मूर्ति के दर्शन हुए ।

४. .... ने ब्रह्मानन्दजी को ..... जाने का आदेश दिया ।

विभाग - २ : सत्संग वाचनमाला भाग - २ - प्रथम संस्करण, जुलै - २०००

प्र. ७ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । (९)

१. "दशहरे और पूर्णिमा का उत्सव तुमने किया है ।"

कौन कहता है ? ..... किसको कहता है ? .....

कब कहता है ? .....

.....  
.....

२. "ये ब्रह्मचारी ऊँघते दिखाई देते हैं, परन्तु जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति तीनों अवस्थाओं में हमारा ही ध्यान करते हैं ।"

३. "आप गप्पे क्यों मार रहे हैं ?"

प्र. ८ निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए । ( दो से तीन पंक्ति में ) ( ४ )

१. श्रीजीमहाराज ने आचार्यों की नियुक्ति करने का विचार किया ।

.....  
.....  
.....

२. अदा ने अपने शिष्यों को बोचासण जाने के लिए कहना आरंभ किया ।

प्र. ९ 'आज्ञापालक दादाखाचर और बहनें ।' - प्रसंग के बारे में १५ पंक्ति में टिप्पणी लिखिए । ( वर्णनात्मक ) ( ५ )

.....  
.....  
.....  
.....  
.....  
.....  
.....  
.....  
.....  
.....  
.....

प्र.१० निम्नलिखित प्रश्नों के एक ( संपूर्ण ) वाक्य में उत्तर लिखिए । ( ४ )

१. एभल खाचर किस के शिष्य थे ?

.....  
.....

२. पूर्णमासी के दिन नित्यानंद स्वामी ने सबको सभा में मूलजी ब्रह्मचारी के लिए क्या बताया था ?

३. कृष्णजीभाई का विवाह किस के साथ हुआ था ?

४. लाडुबा-जीवुबा की बात सुनकर प्रसन्न होते हुए श्रीजीमहाराज ने क्या कहा ?

प्र.११ निम्नलिखित विषय के लिए सूचनानुसार छः सही क्रमांक और उस सही क्रमांक को घटनाक्रम के अनुसार लिखिए । ( ६ )

विषय : मूलजी ब्रह्मचारी की अंतःअवस्था

१. संवत् १९०२ में गढ़डा में बीमार पड़े । २. ब्रह्मचारी ने गुणातीतानन्द स्वामी से प्रार्थना करी, 'हे स्वामी ! कृपया मुझे अपने धाम में ले जाओ ।' ३. अक्षरओरडी में दर्शन करके ब्रह्मचारी का हृदय भारी हो गया । ४. संवत् १९०४ में वरताल में उत्सव मनाया गया । ५. अनन्त मुक्तों के साथ श्रीजीमहाराज मूलजी ब्रह्मचारी को लेने के लिए प्रकट हुए । ६. मूलजी ब्रह्मचारी ने गुणातीतानन्द स्वामी को कहा 'आज मैं धाम में जा रहा हूँ ।' ७. अक्षरओरडी में अन्तिम दर्शन के लिए आओ हम सब साथ चलें । ८. सभी सन्तों को बुलाकर प्रसाद दिया । ९. श्रीजीमहाराज ने दर्शन देकर कहा, 'हमने यह मन्दिर बनवाया है, इस पर सफेदी करवाओ । १०. मुक्तानन्द स्वामी ने कहा, 'मूलजी ब्रह्मचारी जैसा ब्रह्मचारी न होगा ।' ११. पुताईवाले को बुलवाकर मन्दिर पर सफेदी करवाई । १२. मूलजी ब्रह्मचारी का अंतिम संस्कार घेला नदी के दो पत्थरों के बीच के तट पर किया गया था ।

सूचना : ( १ ) केवल सही क्रमांक के सभी छः उत्तर क्रमांक सही होंगे तो ही ३ गुण प्राप्त होंगे । ( २ ) यथार्थ घटनाक्रम भी सही होगा तो ही ३ गुण प्राप्त होंगे, अन्यथा एक भी गुण प्राप्त नहीं होगा ।

( १ ) केवल सही क्रमांक :

( २ ) यथार्थ घटनाक्रम :

प्र.१२ निम्नलिखित गलत वाक्य को उसके विषय के अनुलक्ष्य में सही लिखिए । ( ४ )

सूचना :- संपूर्ण वाक्य सही लिखा होगा तो ही गुण प्राप्त होंगे, अन्यथा एक भी गुण प्राप्त नहीं होगा ।

उदाहरण : विद्यावारिधि सद्गुरु श्री नित्यानंद स्वामी : सन् १८७२ में मार्गशीर्ष कृष्णा नवमी की रात आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज, गुणातीतानंद स्वामी, परमचैतन्यानंदजी, कृपानंदजी आदि सन्तों के दर्शन करते करते उन्होंने कारण देह अहमदाबाद में छोड़ दी ।

उत्तर : विद्यावारिधि सद्गुरु श्री नित्यानंद स्वामी : संवत् १९०८ मार्गशीर्ष शुक्ला अष्टमी के दिन आचार्यश्री रघुवीरजी महाराज, गोपालानंद स्वामी, शुकमुनि, शून्यातीतानंदजी आदि सन्तों के देखते - देखते उन्होंने अपनी नश्वर देह वरताल में छोड़ दी ।

१. भक्तराज दादाखाचर : गुजरात के वालाक क्षेत्र में उमेज नाम का गाँव है । उस गाँव में लाखा कोली की फलों की एक सुन्दर बगीची थी । उस बगीची में केले के वृक्ष के निकट एक आम का पेड़ था ।

उ. ....  
.....

२. भक्तरत्न लाडूबा : लाडूबा ने महाराज को कहलवाया । महाराज ने कहलवाया 'अब इन्हें मुखवास परोसो ।' तब महाराज ने भोजन के पश्चात् का आचमन किया । महाराज ने लाडूबा को अष्टावक्र की घटना का स्मरण कराया ।

३. स्वामी जागा भक्त : जागा भक्त का परिचय अयोध्याप्रसादजी महाराज से करवा रहे थे, तब स्वामी ने कहा : 'इन जागा भक्त ने तुम्हारी आज्ञा के पालन में उत्सव के दर्शन का लोभ छोड़ दिया और बीस दिन तक माणावदर के खेत में मन्दिर के चारे की रखवाली करते रहे ।'

४. श्री कृष्णजी अदा : इन्द्रजीभाई स्वामी के सम्पर्क में आये उससे कुछ दिन पश्चात् स्वामी ने उनके पिता कडवा व्यास से कहा, 'यहाँ वड़ताल में ब्रह्मचारी छोटे हैं ।'

विभाग - ३ : निबंध

प्र.१३ निम्नलिखित किसी एक विषय पर करीब ३० पंक्ति में निबंध लिखिए । ( १० )

१. सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण : दिव्यधामों के दर्शन  
(स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) अप्रैल - २०१३, पा.नं. १२ से १३)

२. बी.ए.पी.एस. युवा प्रवृत्ति : सद्गुरु सन्तों की दृष्टि से  
(स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) फरवरी-मार्च - २०१३, पा.नं. ४२ से ४५)

३. एकांतिक : मेरा जीवन स्वामीश्री के संग (स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) अगस्त - २०१३, पा.नं. ९ से १५)

( ) .....

आगे के पृष्ठों में उपरोक्त तीन निबंध (गुजराती भाषामें) दर्शाए गए हैं ।

\* \* \*

अगत्य की सूचना : सभी परीक्षार्थी अपनी संस्था की निम्नलिखित website - link पर से पुराने सालों के प्रश्नपत्र और उसके उकेलपत्र निःशुल्क डाउनलोड कर सकते हैं और उसकी प्रिन्ट भी निकाल सकते हैं ।  
<http://www.swaminarayan.org/satsangexams/pastpapers/index.htm>

આગામી વર્ષે ૨ માર્ચ, ૨૦૧૪ના રોજ લેવાનાર મુખ્ય પરીક્ષાની પૂર્વતૈયારી માટે મુકાતા **પ્રી-ટેસ્ટના સંપૂર્ણ પ્રશ્નપત્રો હંમેશ મુજબ જાન્યુઆરીમાં (1<sup>st</sup> January, 2014ના રોજ) મુકાશે.** નિબંધ એ સામાન્ય જ્ઞાન સહિત મુક્ત વિષય હોય છે, જે અભ્યાસક્રમના પુસ્તકોમાંથી પૂછાતા નથી. આથી પરીક્ષાર્થીઓ નિબંધની તૈયારી સારી રીતે કરી શકે તે હેતુસર આપણે વહેલાસર ફક્ત તે યાદી આપની સમક્ષ મૂકી છે.

### **પ્રી-ટેસ્ટના નિબંધોની યાદી - List of Pre-test Essays**

#### **પરિચય - ૧ (Parichay-1)**

૧. સર્વાવતારી ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણ : દિવ્યધામોનાં દર્શન (સ્વામિનારાયણ પ્રકાશ - એપ્રિલ - ૨૦૧૩, પા.નં. ૧૨ થી ૧૩)
1. Supreme Bhagwan Swaminarayan: Darshan of the Divine Abodes.
૨. બી.એ.પી.એસ. યુવાપ્રવૃત્તિ : સદ્ગુરુ સંતોની નજરે (સ્વામિનારાયણ પ્રકાશ - ફેબ્રુઆરી-માર્ચ - ૨૦૧૩, પા.નં. ૪૨ થી ૪૫)
2. BAPS Youth Activities: In the Eyes of the Sadguru Sadhus.
૩. એકાંતિક : મારું જીવન સ્વામીશ્રીના સંગે (સ્વામિનારાયણ પ્રકાશ - ઓગસ્ટ - ૨૦૧૩, પા.નં. ૯ થી ૧૫)
3. Ekantik: My Life with Swamishri.

પરીક્ષાર્થી શ્રી,

સસ્નેહ જય શ્રી સ્વામિનારાયણ

**સત્સંગ શિક્ષણ પરીક્ષા માર્ચ ૨૦૧૪ના નિબંધોની પૂર્વ તૈયારી માટે નીચે જણાવેલ માર્ગદર્શન અને સૂચનો ધ્યાનમાં લેવા વિનંતી.**

૧. નિબંધ એટલે કોઈ નિશ્ચિત વિષય ઉપર વ્યવસ્થિત, ચિંતનપૂર્વક અને મુદ્દાસરનું લખાણ. સત્સંગ શિક્ષણ પરીક્ષામાં પૂછાતા નિબંધો સામાન્ય જ્ઞાનના આધારે, પરીક્ષાર્થીના દૈનિક જીવનમાં સત્સંગના સદ્વાંચન અને કથા શ્રવણ અને મનન દ્વારા પ્રાપ્ત થયેલ જ્ઞાનની કસોટી કરતા ૩૫ થી ૪૦ લીટીમાં લખવાના હોય છે.
૨. પરીક્ષાર્થીઓની માગણીને માન આપીને આ વર્ષે પ્રી-ટેસ્ટમાં પૂછાનાર નિબંધોના વિષયો છ માસ અગાઉથી પરીક્ષાર્થીના એકાઉન્ટમાં અપલોડ કરવામાં આવ્યા છે.
૩. પ્રી-ટેસ્ટમાં જે તે પરીક્ષામાં પૂછાનાર નિબંધોના ત્રણ ત્રણ વિષયો આપવામાં આવ્યા છે. માર્ચ ૨૦૧૪ની ફાઈનલ પરીક્ષામાં આ ત્રણ વિષયોમાંથી કોઈપણ એક નિબંધ ચોક્કસપણે પૂછાશે જ. માટે જો આપ આ ત્રણ ત્રણ વિષયો તૈયાર કરશો તો આપ ચોક્કસપણે એક નિબંધ મુખ્ય પરીક્ષામાં ખૂબ જ સારી રીતે લખી શકશો.
૪. આ નિબંધોનું સામાન્ય બંધારણ, લખાણ(મેટર) મોટાભાગે ત્રણ - ચાર વર્ષ દરમ્યાનના સમયગાળામાં પ્રકાશિત થયેલ 'સ્વામિનારાયણ પ્રકાશ'માંથી લેવામાં આવે છે.
૫. અહીં આપેલા નિબંધોનું લખાણ કેવળ દિશા સૂચક છે. આ જ લખાણ ગોખીને પરીક્ષામાં લખવાની જરૂર નથી. આથી વિશેષ સારા મુદ્દાઓનું ચિંતન-મનન કરી આપની રીતે પૂર્વ તૈયારી કરીને લખી શકો છો.
૬. **ગુજરાતી માધ્યમ (ભાષા) સિવાયના પરીક્ષાર્થીઓ માટે :** આ નિબંધોનું મૂળ પ્રકાશન ગુજરાતી ભાષામાં જ હોવાથી તેનું શબ્દશઃ ભાષાંતર ન કરતાં, તેનો ભાવાર્થ સમજીને પરીક્ષાર્થીએ પોતાની રીતે સમજીને તૈયારી કરવાની રહેશે. પરીક્ષા કાર્યાલય અંગ્રેજી કે હિન્દી ભાષામાં આ નિબંધોનું ભાષાંતર આપી નહિ શકે. તેથી ભાષાંતર કરવા અંગેનો પત્રવ્યવહાર કે ઈ-મેલ પણ પરીક્ષા કાર્યાલયને કરશો નહિ તેવી નમ્ર વિનંતી છે.
૭. ગુજરાતી ભાષા વાંચી, લખી કે બોલી ન શકતા હોય તેવા પરીક્ષાર્થીઓએ માતા-પિતા, વડીલો કે અન્ય સ્વજનો-સ્નેહીઓ પાસે વંચાવીને નિબંધનો ભાવાર્થ સમજી પોતાની રીતે, પોતાના શબ્દોમાં લખીને તૈયારી કરવાની રહેશે.
૮. One essay from the above list of essays will be asked in the Final Examination of March-2014.

# સત્સંગ પરિચય

(૧)

સર્વાવતારી ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણ : દિવ્યધામોનાં દર્શન

## Supreme Bhagwan Swaminarayan : Darshan of the Divine Abodes

જન્મ અને મૃત્યુ એક અકળ રહસ્ય છે. શું જન્મ અને મૃત્યુની આ રહસ્યમય ઘટમાળમાંથી મુક્તિ પામીને જીવાત્મા ક્યારેય ભગવાનના ધામમાં જઈ શકે અને સ્થાયીભાવ પ્રાપ્ત કરી શકે? શાસ્ત્રો હા કહે છે, પરંતુ તર્કશીલ મન સવાલ કરે છે : શું ખરેખર ભગવાનના ધામ જેવું કંઈ છે? તેની અનુભૂતિ અને સાબિતીઓ છે? મૃત્યુ પછી ભગવાનના ધામમાં જઈને નથી કોઈએ તેના અહેવાલ મોકલાવ્યા, કે નથી કોઈએ જીવતે-જીવત એ ધામને જોયું, તો એવા ધામમાં વિશ્વાસ કેવી રીતે સંભવે? વળી, શાસ્ત્રોમાં અનેક અવતારો-દેવોનાં ધામોનાં વર્ણનો છે, તે બધાં અલગ અલગ છે? કેવાં છે તે ધામો?

સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયમાં આવા પ્રશ્નોનાં સમાધાન ૨૦૦ વર્ષ પૂર્વેથી મળી ગયાં છે, એ જ ભગવાન સ્વામિનારાયણની સર્વોપરિતાનું એક પ્રમાણ છે.

પરબ્રહ્મ ભગવાન સ્વામિનારાયણનું પૃથ્વી પરનું પ્રાગટ્ય અલૌકિક અને અપૂર્વ હતું. પૂર્વે ન દીઠાં હોય અને ન સાંભળ્યાં હોય એવાં અપ્રતિમ ચરિત્રો દ્વારા તેમણે પોતાના સર્વોપરિ સ્વરૂપનો નિશ્ચય કરાવ્યો હતો.

આધારાનંદ સ્વામી લખે છે -

‘સર્વોપરિ અવતાર હિ તેહ, અલૌકિક રીત સે કરિ તેહું,  
બુદ્ધિવંતકું દેખે મેં આતે, તે હી કરી સર્વોપરિ કહાતે.’ (હ.ચ. ૧૫/૫૯/૨૩-૨૪)

ભગવાન સ્વામિનારાયણે પૂર્વે થયેલા અવતારો તેમજ તેમનાં ધામોનાં દર્શન હજારો મુમુક્ષુઓને અનેક વખત કરાવીને સ્વસ્વરૂપનો નિશ્ચય કરાવ્યો હતો. બાળપણથી જ શ્રીહરિએ આવું અલૌકિક ઐશ્વર્ય બતાવી અનેકને મોક્ષભાગી બનાવ્યા હતા. એક દિવસ છપૈયામાં બાળ ઘનશ્યામને ખોળામાં રમાડતાં ભક્તિમાતાને વિચાર થયો કે, ‘ઘનશ્યામના જન્મ સમયે દેવતાઓએ સ્તુતિ કરી હતી, તો એ અવતારો અને દેવોનાં ધામ કેવાં હશે?’

ત્યાં જ શ્રીહરિની કૃપાથી ભક્તિમાતાને સમાધિ થઈ. તેમણે અનેક અવતારો અને તેમનાં ધામ જોયાં. એટલું જ નહીં, શ્રીહરિલીલામૃત(૨/૧૧/૫૨-૫૩) નોંધે છે :

‘ત્યાં તો દીઠા હરિતણા અવતાર સર્વે,  
મત્સ્યાદિ જે થઈ ગયા જગમધ્યે પૂર્વે.  
તેઓ મળી સ્તુતિ કરે ઘનશ્યામ કેરી,  
થૈ દીન પાન પ્રણયે હરિરૂપ હેરી.’

પ્રકૃતિપુરુષ ભક્તિમાતાને સંબોધીને કહે છે :

‘આ શ્રીહરિ જે સુત છે તમારા, સદા નિયંતા પ્રભુ તે અમારા  
જે કૃષ્ણ આદિ અવતાર થાય, તે સર્વેનું કારણ આ ગણાય.’

હરિલીલામૃત ગ્રંથમાં પણ આ જ ભાવને સ્વયં શ્રીહરિએ સમજાવ્યો છે - ઘણાક અવતાર થયા છે, વર્તમાનકાળે છે ને ભવિષ્યમાં થશે, તે સર્વેનો કારણ અવતારી તે હું જ છું, હું જ અક્ષરધામનો અધિપતિ અવતારી છું. (૫/૮/૩૨)

અક્ષરબ્રહ્મ ગુણાતીતાનંદ સ્વામી આ વાતની પુષ્ટિ કરતાં નોંધે છે કે રામાનંદ સ્વામીના દેહત્યાગ બાદ ફણેણીમાં શ્રીહરિએ અનેકને ગોલોક, વૈકુંઠ, શ્વેતદ્વીપ, અવ્યાકૃત, બદરિકાશ્રમ વગેરે ધામ અને તેના અધિપતિનાં દર્શન કરાવ્યાં હતાં. તેનું વર્ણન કરીને ગુણાતીતાનંદ સ્વામી કહે છે : ‘આવો પ્રૌઢ પ્રતાપ જોઈ મુમુક્ષુઓ

પોતાના મતનો ત્યાગ કરી શ્રીજીમહારાજનું પ્રગટ-પ્રમાણ ભજન કરતા હવા.' (સ્વા.વા. ૭/૩)

સદ્ગુરુ તદ્દુપાનંદ સ્વામી આવો એક પ્રસંગ લખે છે : 'લીંબડી પાસે ડુંગર તળાવમાં શ્રીજીમહારાજે સાધુ-પાર્ષદો અને ભક્તો સાથે સ્નાન કર્યું, ગામમાં ભક્તોએ સામૈયું કરી શ્રીહરિને પધરાવ્યા. ઉત્તમ રસોઈ કરી જમાવ્યા. મહારાજ સંધ્યા સમયે અંકલેશ્વર મહાદેવના મંદિરે દર્શને પધાર્યા. ત્યાં શિવમંદિરમાં મોટી સભા થઈ. સભામાં બેઠેલા વિપ્રોનો સંકલ્પ હતો કે સ્વામિનારાયણ ભગવાન છે તો આપણને શંકરનું સ્વરૂપ તથા ધામ દેખાડે તો સારું. ત્યાં જ શ્રીહરિની ઈચ્છાથી વિપ્રોને શંકર-પાર્વતી, કાર્તિકેય, ગણેશ, ગંગાજી અને શિવના ગણ સહિત કૈલાસધામનાં દર્શન થયાં. સૌ વિપ્રો શ્રીજીમહારાજને સર્વ અવતારના અવતારી જાણી સત્સંગી થયા. ત્યારબાદ શ્રીમાળી બ્રાહ્મણોએ પ્રાર્થના કરી કે કુળદેવી મહાલક્ષ્મીનાં દર્શન કરાવો. ત્યારે મહારાજના કહેવાથી વિપ્રોએ મહારાજ સામે જોયું. સૌને તત્કાલ સમાધિ થઈ, ચતુર્ભુજધારી મહાલક્ષ્મીજીનાં દર્શન થયાં. તેમના ચાર હાથમાં પૂજાનો સામાન હતો. આ પૂજાસામગ્રી દ્વારા તેઓ શ્રીહરિનું પૂજન કરતા હોય તેવાં દર્શન થયાં. ત્યારે શ્રીમાળી બ્રાહ્મણોએ પૂછ્યું, તમે કોની પૂજા કરો છો ? મહાલક્ષ્મીએ કહ્યું, 'મારા સ્વામીની. તમે મને ઓળખો છો પણ મારા સ્વામીને ઓળખતા નથી.' બ્રાહ્મણો કહે, 'તમારા સ્વામી વળી કોણ ?' મહાલક્ષ્મી કહે, 'આ સાક્ષાત્ પુરુષોત્તમનારાયણ. માટે કલ્યાણ જોઈતું હોય તો તેમનો આશ્રય કરો. અમારામાં કંઈ નહીં વળે.' આવું સાંભળી શ્રીમાળી બ્રાહ્મણો પણ વર્તમાન ધારી સત્સંગી થયા. (તદ્દુપાનંદ સ્વા.વા. ૩૭)

ભગવાન સ્વામિનારાયણના આવા દિવ્ય પ્રતાપની વર્ષા જ્ઞાતિ-વર્ષા કે સંપ્રદાયની સીમાઓથી પર હતી. શ્રીહરિના આ સર્વોપરિ સ્વરૂપનો અનુભવ ઈતરધર્મિઓને પણ થયો હતો. અમદાવાદથી દક્ષિણે સરખેજ ગામે રહેતા મુસ્લિમ ભક્ત ડોસાતાઈને શ્રીહરિએ પયગંબર અને અન્ય ધામોનું દર્શન કરાવ્યું હતું.

આમ, પરબ્રહ્મ સ્વામિનારાયણ ભગવાને અતિશય કરુણા કરીને મુમુક્ષુઓને અનેક ધામોનું દર્શન કરાવ્યું, શાસ્ત્રોમાં વર્ણવેલાં તે ધામોનાં વર્ણનની સત્યતાની પ્રતીતિ કરાવી.

પરંતુ એ ધામ જન્મ અને મરણથી પર લઈ જઈને શાશ્વત અને ચિરંતન સુખની અનુભૂતિ કરાવનારાં નથી. એ માટે તો અક્ષરધામની પ્રાપ્તિ કરવી પડે, જ્યાં ગયા પછી ક્યારેય આ ઘટમાળમાં પાછું આવવાનું રહેતું નથી. જ્યાં પહોંચવા માટે જીવ-ઈશ્વરોનાં સાધન ટાંચાં પડે છે એ દિવ્ય અક્ષરધામની પણ અનુભૂતિ અને ગતિ પણ ભગવાન સ્વામિનારાયણે અનેકને કરાવી - પોતાની દિવ્ય કૃપાદૃષ્ટિ માત્રથી ! તેના વિશેષ વર્ણનો અન્ય શ્લોકના નિરૂપણમાં માણીશું. કોટિ કોટિ વંદન આવા સર્વોપરિ, સર્વાવતારી શ્રી સ્વામિનારાયણ ભગવાનને... ◆

(૨)

બી.એ.પી.એસ. યુવાપ્રવૃત્તિ : સદ્ગુરુ સંતોની નજરે

**BAPS Youth Activities : In the Eyes of the Sadguru Sadhus**

■ પૂજ્ય મહંત સ્વામી

આજે સૌએ જોયું કે બી.એ.પી.એસ.ના યુવાનોમાં સંપ, સેવાભાવના સંયમ, સંસ્કાર, સત્સંગનાં મૂલ્યો છે. આ બધાં મૂલ્યોના મૂળમાં છે - આધ્યાત્મિકતા. આધ્યાત્મિકતા એટલે ભગવાનમાં શ્રદ્ધા. આ વિશ્વમાં જેને જેને ભગવાનમાં શ્રદ્ધા છે તે ઘણું બધું અશક્ય કાર્ય પણ શક્ય કરી શક્યા છે. તબીબી વિજ્ઞાન પણ આના પર ખૂબ ભાર મૂકે છે. ગાંધીજી, અબ્રાહમ લિંકન જેવા વિશ્વના મહાપુરુષો પણ ભગવાનમાં ખૂબ શ્રદ્ધા ધરાવતા હતા. યોગીજી મહારાજ અને પ્રમુખસ્વામી મહારાજ એટલે તો શ્રદ્ધાનું મૂર્તિમાન સ્વરૂપ. માન અપમાન, ગમે તેટલી મુશ્કેલી વગેરેમાં પણ યોગીજી મહારાજ અને પ્રમુખસ્વામી મહારાજ, એમ જ માને કે કર્તાહર્તા ભગવાન છે. તેઓના આશીર્વાદથી એવી જ શ્રદ્ધા હજારો કાર્યકરોમાં, યુવાનોમાં અને હરિભક્તોમાં ઊતરી છે. અમે પણ યોગીજી મહારાજના યોગમાં આવ્યા એટલે જ ભગવાનમાં શ્રદ્ધા જાગી છે અને અમે સાધુ પણ એમના લીધે જ થયા છીએ. આજે હજારો યુવાનોમાં શ્રદ્ધા જોવા મળે છે, એ યોગીજી મહારાજ અને પ્રમુખસ્વામી મહારાજનો એક ચમત્કાર જ છે.

અત્યારે વિશ્વમાં સંસ્કારની મશ્કરી થાય છે. પરંતુ વિશ્વમાં યુદ્ધો, કલેશ, કંકાસ વગેરે નાતજાત, દેશ-દેશ વચ્ચે ઘર્ષણ વગેરેનું કારણ છે - માનવીનું ગંદું મન. પરંતુ એ ગંદું મન સુધરે છે - પવિત્ર સંસ્કારોથી જ. સંસ્કારોથી જીવનમાં શ્રદ્ધા જાગે છે, શ્રદ્ધાથી જ માન-અપમાનમાં સ્થિર રહેવાની શક્તિ મળે છે.

બી.એ.પી.એસ. યુવાનોમાં એવી દૃઢ શ્રદ્ધા જોવા મળે છે. યુવાનો નિઘડકપણે કોલેજો-ઓફિસોમાં તિલક-ચાંદલો કરીને જાય છે, તેઓ વ્યસનમુક્ત રહે છે, તેના પાયામાં છે - ભગવાનમાં શ્રદ્ધા, યોગીજી મહારાજ અને પ્રમુખસ્વામી મહારાજમાં શ્રદ્ધા. શ્રદ્ધાને કારણે જ આ બધું શક્ય છે.

યોગીજી મહારાજ ઘણી વખત કહેતા : 'કાઢી બલ્લા આપ્યા અલ્લા.' વ્યસનમુક્તિનું કાર્ય આ રીતે થાય છે. ધારો કે વ્યસન એક વ્યક્તિ છે અને એ એક ખુરશીમાં બેસે છે. ખુરશીમાંથી તે વ્યસનને ઉઠાડીએ અને એ ખુરશી પર કોઈ બીજી વ્યક્તિ ન બેસે તો ત્યાં ફરીવાર પેલું વ્યસન જ બેસી જશે. બહારની દૃનિયામાં આવું થાય છે, પણ આપણે ત્યાં યુવાનોમાં ભગવાન પ્રત્યે શ્રદ્ધા જાગે છે, એટલે આપોઆપ વ્યસન છૂટી જાય છે. વ્યસનને બદલે શ્રદ્ધા તેના હૃદયમાં બેસે છે, તેથી



તેને તો વ્યસન વળગતું નથી, પરંતુ બીજા કેટલાયને વ્યસનમુક્ત કરે છે. જપ-તપ મંત્રલેખન, સંયમ સાથે કેવી દૃઢતાપૂર્વક નિયમો પાળે છે આ યુવાનો! હાસ્યને પાત્ર થાય તો પણ આ યુવાનો નિયમ નથી છોડતા. એ બધાનું મૂળ કારણ છે ભગવાનનાં શ્રદ્ધા. પરંતુ સાચી શ્રદ્ધા જાગે છે પ્રમુખસ્વામી મહારાજ અને યોગીજી મહારાજ જેવા સત્પુરુષને લીધે જ. તેમનું સમગ્ર જીવન આપણા માટે સમર્પિત થયું છે. એમનો નિઃસ્વાર્થ પ્રેમ છે. તેઓ આપણા માટે ઘસાયા છે. એને કારણે આપણે તેમના દિવ્ય પ્રેમના ભૂખ્યા થયા છીએ. તેમના નિઃસ્વાર્થ પ્રેમને કારણે આપણે ગમે તે કરવા તૈયાર થઈએ છીએ. તેઓએ ભગવાન સ્વામિનારાયણમાં આપણા સૌની શ્રદ્ધા દૃઢ કરાવી અને એ શ્રદ્ધાને લીધે આજે આ બધું દેખાય છે. યોગીજી મહારાજ અને પ્રમુખસ્વામી મહારાજે બુદ્ધિવાળા યુવાનોમાં પણ શ્રદ્ધા દૃઢ કરાવી છે. એટલે સૌ ભગવાનની ભક્તિ તો કરે છે પરંતુ સાથે સાથે સુખ-દુઃખ વગેરે પ્રસંગોમાં પણ એ શ્રદ્ધાથી જ સૌ નિશ્ચલ રહે છે.

પરબ્રહ્મ ભગવાન સ્વામિનારાયણ અને ગુણાતીત સત્પુરુષમાં એવી શ્રદ્ધા વિશેષ ને વિશેષ દૃઢ થતી રહે એ જ પ્રાર્થના. ◆

### ■ પૂજ્ય ડોક્ટર સ્વામી

આજે આટલી મોટી સંખ્યામાં આપણે સૌ એકત્રિત થયા છીએ એના મૂળમાં છે - સંઘનિષ્ઠા. અને એ સંઘનિષ્ઠાના મૂળમાં છે સ્વરૂપનિષ્ઠા. સ્વરૂપનિષ્ઠા એટલે ભગવાન અને ગુણાતીત સત્પુરુષમાં દૃઢ શ્રદ્ધા. શ્રી સ્વામિનારાયણ ભગવાન સર્વોપરી છે; ગુણાતીતાનંદ સ્વામી અક્ષરબ્રહ્મનો અવતાર છે; શ્રી ભગતજી મહારાજ, શ્રી શાસ્ત્રીજી મહારાજ અને પ્રમુખસ્વામી મહારાજ ગુણાતીત સત્પુરુષ છે. તેઓ જ મોક્ષનું દ્વાર છે, આપણા ગુરુ છે. આ વાત સૌનાં હૃદયમાં દૃઢ છે એ જ આ સંઘનિષ્ઠાનું કારણ છે. પરંતુ હજુ એમાં ઘણું આગળ વધવાનું છે.

એ સ્વામિનારાયણ ભગવાન અને એ ગુરુપરંપરા સદાય આપણી સાથે છે, તેઓ સદાય આપણને જુએ છે, જાણે છે અને આપણાં દરેક કર્મનું ફળ આપે છે. આપણી સમુદ્ર જેવી ભૂલની ક્ષમા કરે છે, પણ અણુ જેટલી ભૂલને પણ ચલાવી લેતા નથી.

એ ભગવાન દરેકના હૃદયમાં બિરાજમાન છે. એને પામવા માટે આપણે સંઘનિષ્ઠાની ઉચ્ચ ભૂમિકાએ પહોંચવાનું છે.

એ માટે થોડાંક સૂત્રોનું સ્મરણ કરીએ. (તેઓએ સૌને આ સૂત્ર જિલાવ્યા.)

સમગ્ર વિશ્વ - એક પરિવાર.

ભારત દેશ - એક પરિવાર.

મારું રાજ્ય - એક પરિવાર.

મારું શહેર - એક પરિવાર.

મારો પરિવાર - સંપેલો પરિવાર.

પછી કહ્યું, ‘હવે અંતર્દૃષ્ટિ કરવાની આવી. અહીં તમારામાંથી કેટલાક પરણેલા છે. આ વિશાળ સમુદાયમાંથી કેટલાં પતિ-પત્નીને એકતા છે ? રામ અને સીતા વચ્ચે હતી એવી એકતા છે ? આ દિશામાં વિચારવાનું છે. પછી અહીં બી.એ.પી.એસ.નાં જુદાં જુદાં યુવક મંડળો આવ્યાં છે. એ બધા વચ્ચે એક પરિવારની ભાવના જોઈએ.

બી.એ.પી.એસ. - એક પરિવાર.

મારું મંડળ - સંપીલું મંડળ.

મારો પરિવાર - સંપેલો પરિવાર.

આ પાયો પકડવાનો છે. તે માટે સ્વરૂપનિષ્ઠા અને તેમાં પણ આત્મનિષ્ઠાની આવશ્યકતા છે. ‘હું આત્મા છું, બ્રહ્મ છું, અક્ષર છું, સુખરૂપ છું, જ્ઞાનરૂપ છું, આનંદરૂપ છું, શાંત છું. મારે કોઈ જાતિ નથી, મારે કોઈ વર્ણ નથી, મારે કોઈ આશ્રમ નથી.’ આ પાયો દૃઢ કરીને ભેદભાવોથી છૂટા પડવાનું છે. આ સ્વરૂપનિષ્ઠાને આધારે સંઘનિષ્ઠા આવશે. સંઘનિષ્ઠાને આધારે સ્વધર્મનિષ્ઠા આવશે. સ્વધર્મનિષ્ઠામાં સ્વામિનારાયણ ભગવાને બહુ જ અગત્યની વાત કરી છે, તે છે - નિષ્કામધર્મ.

આજે ખૂન, બળાત્કાર વગેરેના હજારો કેસો કોર્ટમાં પડ્યા છે. આના મૂળમાં આ સ્વધર્મનિષ્ઠાની ખામી છે. મોબાઈલ, ઈન્ટરનેટ, ટી.વી., છાપાં, મેગેઝિનમાં ખૂબ કચરો ઠલવાય છે, જે આપણી સંઘનિષ્ઠાને બરબાદ કરી નાંખે છે. એ માટે જાગ્રત રહીને રોજ આ રીતે આ વિચાર કરવાનો છે. આપણે આ રીતે કાર્ય કરીશું તો દૈશ્ય કંઈક અલગ હશે.

એવી સંઘનિષ્ઠા અને સ્વરૂપનિષ્ઠા દ્વારા સેવા કરવાનું સૌને બળ મળે એ પ્રાર્થના. ◆

### ■ પૂજ્ય ઈશ્વરચરણદાસ સ્વામી

૧૯૫૦ના દાયકાની વાત છે. બ્રહ્મસ્વરૂપ યોગીજી મહારાજ ગામડાંઓમાં વિચરણ દરમ્યાન પોતાની સાથે યુવાનોને ફેરવતા અને ખાસ કરીને યુવાનોમાં શિક્ષાપત્રીના નીતિનિયમો, આહારવિવેક, નાટક-સિનેમા વગેરે ન જોવાનો વિવેક, પૂજા-પાઠ વગેરે સૌને શીખવતા. સાથે સાથે દરેક યુવકને સેવાનું વ્રત આપતા. યુવાનોને સેવા માટે ખૂબ પ્રેરણા આપતા. યુવાન નીચામાં નીચી અને નાનામાં નાની સેવા કરે એ એવી તાલીમ આપતા. ઠાકોરજી અને હરિભક્તોનાં એટાં વાસણ ઊટકવાં, શૌચાલયો સાફ કરવાં વગેરે સેવાઓ તેઓ યુવાનો પાસે કરાવતા. આ સેવાભાવના શીખવીને યોગીજી મહારાજ આપણી અંદર રહેલી માનની પ્રકૃતિને દૂર કરવાની પ્રેરણા આપતા. સાથે સાથે તેઓ યુવાનોને સંયમના પાઠ આપતા. યુવાનો તપશ્ચર્યા કરે, ઉપવાસ કરે અને સાથે સાથે બ્રહ્મચર્યનું પાલન કરે એનો તેઓ અતિશય આગ્રહ રાખતા. એ માટે તેઓ યુવાનોને નિયમો અને ખૂબ પ્રેરણા આપતા. જે યુવાનો સાથે ફરતા હોય તેમને રોજ રાત્રે નીચે જાજમ ઉપર સૂવાનું, ગાદલાં કે ઓશીકાં નહીં વાપરવાનાં, ઠંડીમાં પણ ઠંડા પાણીમાં નાહવાનું, ટૂંકમાં, શરીરની સુવિધાઓનો ત્યાગ કરીને તેઓ સંયમ-તપશ્ચર્યા જીવનમાં દૃઢ કરવાની તાલીમ આપતા. તેઓ હંમેશાં કહેતા કે સારી વસ્તુ બીજાને આપી દેવી. સારું ગાદલું, સારું દાતણ, ગરમ પાણી બીજા હરિભક્તોને આપીને સેવા કરવી પણ આપણે તો ઊતરતામાં ઊતરતી વસ્તુ ભોગવવી.

સાથે સાથે યોગીજી મહારાજે યુવાનોને રવિવારની સત્સંગ-સભાની પ્રેરણા આપી. યુવાનો દર રવિવારે સત્સંગસભા કરે, આપણાં શાસ્ત્રોનું અધ્યયન કરે, શાસ્ત્રોમાંથી સંસ્કાર અને ધર્મ, નીતિ, ભક્તિ, શ્રદ્ધાની વાતોને જીવનમાં દૃઢ કરે - એ માટે એમનો જબરજસ્ત પુરુષાર્થ હતો. સાથે સાથે તેઓ સાથે વિચરતા યુવાનોને આપતા કે તમારા ગામમાં જઈ યુવકમંડળ શરૂ કરો. એમની પ્રેરણાથી શરૂઆતમાં ૨૫ થી ૫૦ મંડળો શરૂ થયાં. આજે ૬૦ વર્ષ પછી લગભગ ૧૭,૫૦૦

જેટલા યુવા-મંડળો, બાલ-મંડળો, સત્સંગમંડળો આખા વિશ્વમાં પ્રવૃત્ત છે. એ એમના દિવ્ય અને દૃઢ સંકલ્પનું ફળ આપણને જોવા મળે છે.

યુવાનોની શક્તિઓનો વિકાસ થાય, એમની સર્વપ્રકારે પ્રગતિ થાય, એ માટે તેઓ યુવાનોને હસ્તલિખિત અંકો તૈયાર કરવાની પ્રેરણા આપતા. યોગીજી મહારાજ હાઈસ્કૂલ કે કોલેજમાં ભણેલા નહોતા. એમણે તો ધારીની ગામડાંની શાળામાં ૬ ધોરણ સુધી અભ્યાસ કરેલો. પણ યુવાનો હસ્તલિખિત અંક તૈયાર કરે એ માટે મહારાજની પ્રેરણાથી યુવકો લેખો અને કાવ્યો લખે, સુશોભન કરીને સુંદર અંકો તૈયાર કરે. યુવાનો બેન્ડવાદન કરે એ પણ એમને બહુ ગમતું. આ રીતે અનેક પ્રકારની સેવા પ્રવૃત્તિઓમાં યુવકો જોડાય એ માટે એમણે ખૂબ પુરુષાર્થ કર્યો.

ભારતમાં સન ૧૯૫૨થી એમણે વિધિવત્ આ યુવકપ્રવૃત્તિ શરૂ કરી અને ત્યારપછી ૧૯૫૪ પછી પૂર્વ આફ્રિકામાં કેન્યા, યુગાન્ડા, ટાન્ઝાનિયામાં હરિભક્તો દ્વારા આ યુવાપ્રવૃત્તિ શરૂ કરાવી. ૧૯૫૫માં યોગીજી મહારાજે ત્યાં પધારીને તેને ખૂબ પુષ્ટિ આપી. તેઓની પ્રેરણાથી આફ્રિકામાં લગભગ દર વર્ષે યુવકોનાં અધિવેશનો થતાં. એ અધિવેશનોમાં યુવાનોને મુખપાઠ, પ્રવચન વગેરેની તાલીમ આપવામાં આવતી. એમના એ શુભ સંકલ્પથી ભારતમાં પણ અધિવેશનો, સ્પર્ધાઓ, શિબિરો આ બધું ઉત્તરોત્તર થવા લાગ્યું. સન ૧૯૬૮માં અટલાદરામાં યોગીજી મહારાજના સાંનિધ્યમાં યુવકોનું પ્રથમ રાષ્ટ્રીય અધિવેશન યોજાયું હતું. જેમાં વિવિધ સ્પર્ધાઓમાં ખૂબ મોટી સંખ્યામાં યુવકોએ ભાગ લીધો હતો. એ પછી ૧૯૭૧માં ગોંડલમાં યુવાનોનું આવું અધિવેશન થાય અને ૫૦૦૦ યુવાનો ભેગા થાય એવો સંકલ્પ યોગીજી મહારાજે કરેલો. એને માટે અમારી પાસે બધી તૈયારી કરાવી, એ માટે અમે એક પત્રિકા તૈયાર કરેલી, એનું વાંચન યોગીજી મહારાજ પાસે કર્યું. ત્યારે એમાં પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજનું નામ રહી ગયેલું. તે વખતે યોગીજી મહારાજે ટકોર કરી કે ‘આમાં તમે પ્રમુખસ્વામીનું નામ કેમ લખ્યું નથી ? એમનું નામ લખો. એમની હાજરીમાં આ યુવા અધિવેશન કરવાનું છે.’

અને ખરેખર બન્યું પણ એવું કે ૧૯૭૦-૭૧ના જાન્યુઆરીમાં યોગીજી મહારાજ અક્ષરધામ પધાર્યા અને પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજના સાંનિધ્યમાં એ ભવ્ય અધિવેશન ગોંડલમાં યોજાયું હતું.

યુવાનોમાં સત્સંગના સંસ્કારો અને શાસ્ત્રોનું જ્ઞાન દૃઢ થાય એટલા માટે યુવાનો અંદરોઅંદર ગોષ્ઠિ અને પ્રશ્નોત્તરી કરે, પ્રવચનો કરે એ યોગીજી મહારાજને ખૂબ જ ગમતું. તેઓ પણ રોજ વહેલી સવારે ૫ વાગ્યે યુવકો સાથે આધ્યાત્મિક ગોષ્ઠિ કરતા. વેકેશનમાં સાથે ફરતા યુવકો સાથે સાથે રાત્રે ૧૧ થી ૧૨ વાગ્યા સુધી ગોષ્ઠિ કરતા. યુવાનોનાં હૃદયમાં સત્સંગના સંસ્કારો સિંચવાનો એમને આવો દૃઢ આગ્રહ હતો.

યુવાનોના જીવનમાં ધીરે ધીરે ત્યાગ-વૈરાગ્યની દૃઢતા થાય એવી પ્રેરક વાતો પણ કરતા. યુવાનો સાધુ થાય તે માટે પણ તેઓ ખૂબ પ્રેરણા આપતા. આમ તો, સંસાર છોડવો બહુ કઠણ છે, એમાંથી આસક્તિ મૂકવી તે ઘણી કઠણ છે. પણ યોગીજી મહારાજની વાતોથી ત્યાગ, વૈરાગ્યનો રંગ ચડી જાય. અને એમની દિવ્યવાણી, એમની કૃપાદષ્ટિ, એમના આશીર્વાદને કારણે શિક્ષિત યુવાન સાધુઓ તૈયાર થઈ ગયા. એમણે ૧૯૬૧માં, ગઢડામાં ૫૧ સુશિક્ષિત યુવાનોને ગઢપુરમાં દીક્ષા આપી. પછી સંકલ્પ કર્યો કે ભવિષ્યમાં પ્રમુખસ્વામી મહારાજ દ્વારા ૭૦૦ સાધુ થશે. આજે એ સંકલ્પ પૂર્ણ થયો છે. પ્રમુખસ્વામી મહારાજ દ્વારા દીક્ષિત થયેલા લગભગ ૧૦૦૦ જેટલા સંતો સત્સંગની સેવા કરી રહ્યા છે.

આ બધાંનાં મૂળમાં છે - યોગીજી મહારાજનો યુવાનો પ્રત્યેનો પ્રેમ, એમનું વાત્સલ્ય, એમની કરુણા અને યુવાનોનું કેવળ હિત કરવાની તેમની ભાવના. યુવાનો તેમનો જન્મ, એમનું જીવન સાર્થક કરે તે એક માત્ર સ્વાર્થ. એ હેતુ અને એ સ્વાર્થ માટે એમણે અવિરત મહેનત કરીને, ખૂબ પુરુષાર્થ કરીને આ બધું કાર્ય કર્યું.

ખરેખર આપણે બહુ ભાગ્યશાળી છીએ કે સન ૧૯૭૧માં યોગીજી મહારાજના અક્ષરધામગમન પછી પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજે આ યુવાપ્રવૃત્તિને ખૂબ પ્રોત્સાહન આપ્યું. એમને હજારો-લાખો યુવાનોને વ્યક્તિગત મળીને, વ્યક્તિગત બળ-પ્રેરણાની વાતો કરીને ભારત અને વિશ્વમાં ગામોગામ ફરીને આ યુવાસત્સંગ પ્રવૃત્તિને જ પ્રોત્સાહન આપ્યું. એમાં શિબિરો થાય, અધિવેશનો થાય, વિવિધ કાર્યક્રમો થાય, યુવાનો દેશની સેવા કરે, સમાજની સેવા કરે - આ બધું કાર્ય પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજે કર્યું. આ રીતે ૧૯૫૨માં જે યુવાપ્રવૃત્તિ શરૂ થઈ હતી તેનો આવો વિકાસ જોઈ રહ્યા છીએ. તેની સાથે સાથે સત્સંગ પરીક્ષા પ્રવૃત્તિ તેમજ બીજી અનેક પ્રવૃત્તિઓનો વિકાસ આપણે જોઈ રહ્યા છીએ. ખૂબ ભીડો વેઠીને યોગીજી મહારાજ અને પ્રમુખસ્વામી મહારાજે કરેલા આવા અત્યંત પુરુષાર્થથી આજનું આ દૃશ્ય જોવા મળે છે.

હમણાં થોડા મહિના પૂર્વે પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજના સાંનિધ્યમાં સારંગપુરમાં યુવાઅધિવેશન યોજાઈ ગયું. જેમાં દેશમાંથી ૨૪,૦૦૦ જેટલા યુવાનોએ વિવિધ સ્પર્ધાઓમાં ભાગ લઈને પોતાની ભક્તિ રજૂ કરી હતી. આ રીતે અમેરિકા અને અન્ય દેશોમાં પણ વિશાળ પાયે અધિવેશનો થાય છે. એ લગભગ એક એક અધિવેશનમાં હજારો ભાળકો, યુવાનો અને બહેનો ભાગ લે છે.

વિશ્વમાં અમેરિકા, ઈંગ્લેન્ડ, આફ્રિકા, ઓસ્ટ્રેલિયા, ન્યૂઝીલેન્ડ વગેરે અનેક દેશોમાં આ બી.એ.પી.એસ. યુવાપ્રવૃત્તિનો આજે વિકાસ જોવા મળે છે, એ માટે આપણે ગુરુહરિ પ્રમુખસ્વામી મહારાજના અત્યંત ઋણી છીએ. કેવળ એમના આશીર્વાદ, એમની પ્રેરણા, એમનું બળ અને એમનો શુભ સંકલ્પ, એને કારણે આ બધું કાર્ય સિદ્ધ થયેલું જણાય છે.

આ પ્રસંગે પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજનો આપણે જેટલો આભાર માનીએ તેટલો ઓછો છે. અને આ રીતે જન્મોજન્મ એમની આજ્ઞા પ્રમાણે સેવા કરી અને એમનું ઋણ અદા કરીએ એવું બળ શ્રીજીમહારાજ, શાસ્ત્રીજી મહારાજ, યોગીજી મહારાજ, પ્રમુખસ્વામી મહારાજ આપણને આપે એ જ પ્રાર્થના...’ ♦

### ■ પૂજ્ય વિવેકસાગરદાસ સ્વામી

બ્રહ્મસ્વરૂપ યોગીજી મહારાજે સન ૧૯૫૨માં શરૂ કરેલી યુવાપ્રવૃત્તિને પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજે અનેક કષ્ટો વેઠીને વિકસાવી છે.

સન ૧૯૮૦માં વલ્લભવિદ્યાનગર ખાતે યુવા અધિવેશન થયું ત્યારે તેમાં બી.એ.પી.એસ.ના ૨૧,૦૦૦ યુવાનો એકત્રિત થયેલા. તેમાંથી ૧૦,૮૦૦ યુવાનોને સ્વામીશ્રી એક જ આસન ઉપર બેસીને મળી રહ્યા હતા. અસહ્ય ગરમી હતી. જમવામાં પણ ખૂબ મોડું થઈ રહ્યું હોવાથી યુવકોને મળવાનું બંધ કરવા માટે સૌએ સ્વામીશ્રીને વારંવાર વિનંતી કરી. પરંતુ સ્વામીશ્રી છેક સુધી બેસી રહ્યા અને કહ્યું, ‘આ યુવકોનો દાખડો તો જુઓ ! કેટલે દૂરથી આવ્યાં છે !’ બે વાગ્યા સુધી આ મુલાકાતોનો પ્રવાહ ચાલ્યો. સ્વામીશ્રીની પાંપણો પણ વૂળથી ભરાઈ ગયેલી. ખૂબ શ્રમ પડ્યો છતાં યુવકો પ્રત્યેના સ્નેહને લીધે સ્વામીશ્રીને તો આનંદ જ હતો.

સન ૧૯૮૫માં મુંબઈમાં વલ્લભવિદ્યાનગરના બી.એ.પી.એસ. છાત્રાલયના ત્રિદશાબ્દી ઉત્સવમાં, યુવકોને રાજી કરવા પોતાના નિર્ધારિત કાર્યક્રમો છોડીને

સ્વામીશ્રી પધાર્યા હતા. સમયની મુશ્કેલી વચ્ચે પણ તેઓએ આશીર્વાચન તો આપ્યાં પણ દરેક યુવકને વ્યક્તિગત રીતે મળ્યા ! સૌ આનંદવિભોર થઈ ગયા.

ગણેશ સિંઘવ નામનો યુવક વિદ્યાનગરમાં ભણતો હતો. તેની ઈચ્છા હતી સ્વામીશ્રી મારે ગામડે પધારે. તે વખતે અસહ્ય ગરમી હતી. વળી, તેના ગામ સુધી રસ્તો પણ નહીં, છતાં સ્વામીશ્રી ઊભડ-ખાભડ રસ્તાઓ ખૂંદીને ત્યાં પહોંચ્યા. પેટ્રોમેક્સના અજવાળે સભા કરી. ત્યાં સ્વામીશ્રીના ઉતારા માટે આખા ગામમાં કોઈ પાકું મકાન નહોતું. તેથી માટીના એક મકાનમાં ગાદલું નાખીને સૂતા, અને બીજે દિવસે ખૂબ ગરમીમાં પણ એક માટીના મકાનમાં રહ્યા.

સુખપુરના એક યુવાન વિદ્યાર્થી રવજીભાઈ વૈષ્ણવને પણ ઈચ્છા હતી કે મારે ગામ સ્વામીશ્રી પધારે. સ્વામીશ્રીની સાથે વિચરતા અમે સૌએ તો ના પાડી દીધી. પણ સ્વામીશ્રીએ કહ્યું કે અમે આવીશું અને આખો દિવસ ત્યાં રહીશું. અતિ વ્યસ્ત કાર્યક્રમ વચ્ચે પણ માત્ર એક યુવકને ખાતર સમય કાઢીને સ્વામીશ્રી એ ગામમાં ગયા અને સાવ સામાન્ય પરિસ્થિતિવાળા ઘરમાં રહ્યા. બીજે દિવસે ખેતરોમાં પધરામણી કરી તેમને રાજી કર્યાં. આવી અનેક તકલીફો વેઠીને સ્વામીશ્રીએ યુવાનોને રાજી કરવા વિચરણ કર્યું છે. એક વાપીના યુવક બાબુભાઈએ સ્વામીશ્રીને કહ્યું કે, ‘સ્વામી ફરી આવો ત્યારે મારે ત્યાં પધરામણી કરજો.’ સ્વામીશ્રી કહે, ‘ચાલો, અત્યારે જ પધરામણી કરી લઈએ.’ અને એ રીતે રાજી કર્યાં. એક વાર સ્વામીશ્રી જહોનિસબર્ગ(દક્ષિણ આફ્રિકા)માં હતા. તેઓને તાવ હતો. આમ છતાં સ્વામીશ્રી યુવકોની સભામાં પધાર્યા અને સૌને રાજી કર્યાં. એક વાર દાદરા-નગરહવેલી આદિવાસી વિસ્તારમાં મોટા વાઘછીપામાં રહેતા રામુભાઈના ઘેર પણ સ્વામીશ્રી ગાડામાં બેસી પધાર્યા હતા. દરેક યુવકને રાજી કરવા સ્વામીશ્રીએ કેટલો ભીડો વેઠ્યો છે ! એક વાર સ્વામીશ્રી અમદાવાદ પધાર્યા ત્યારે યુવક મંડળના કિરણભાઈ પીઠવા વગેરે યુવકોએ નક્કી કર્યું કે સ્વામીશ્રી અમદાવાદમાં રહે ત્યાં સુધી દરરોજ એક યુવક સ્વામીશ્રીની દિનચર્યા નિહાળે અને સૌ સમક્ષ તે રજૂ કરે. રોજ સ્વામીશ્રી પધરામણીઓમાં જાય ત્યારે ગાડીમાં જગ્યા પણ ન હોય. વ્યવસ્થાપકો તો ના પાડી દે. પણ સ્વામીશ્રી યુવક માટે પ્રેમથી ગાડીમાં જગ્યા કરાવી આપે. યુવકે નોંધેલો આખા દિવસનો રિપોર્ટ રાત્રે ૧૨ વાગે પણ સ્વામીશ્રી પ્રેમપૂર્વક સાંભળે. અમદાવાદના યુવક દીપકભાઈ પટેલને ત્યાં ભર વરસાદમાં સ્વામીશ્રી પધાર્યા હતા. દીપકભાઈનાં લગ્ન વસંતપંચમીના દિવસે હતાં. તે દિવસે સવારે વડોદરામાં વસંતપંચમીનો ઉત્સવ કરીને સાંજે ફર્ટિલાઈઝર નગરની સભામાં પોતાનું જવાનું મોકૂફ રાખીને અન્ય સંતોને મોકલ્યા અને સ્વામીશ્રી દીપકભાઈને આશીર્વાદ આપવા લગ્નમાં મહેળાવ ગયા.

સન ૧૯૭૪માં સ્વામીશ્રી અમેરિકા ગયા હતા. તે વખતે કોલકાતાના અતુલ અજમેરા અમેરિકામાં સ્થાયી થયા હતા. સ્વામીશ્રીએ કહ્યું કે અમેરિકામાં અતુલ ક્યાં હશે ? સ્વામીશ્રીએ સૌને તેની ભાળ મેળવવા કહ્યું. અંતે રાલેમાંથી અતુલભાઈ મળી ગયા. અતુલ અજમેરા એરોપ્લેનમાં આવ્યા અને પરેશ ત્રિવેદીને ત્યાં સ્વામીશ્રી જમી રહ્યા હતા. જમતાં જમતાં ઊભા થઈ અને સ્વામીશ્રી અતુલને ભેટી પડ્યા. આ રીતે સન ૧૯૭૭માં ઈશ્વરભાઈ કોઠારીના દીકરા રમેશને સ્વામીશ્રીએ કહ્યું કે ‘અમે, આખું અમેરિકા ફરી વળ્યા અને તું એલ.એ.માંથી મળ્યો ! મુંબઈના યુવક વિનોદભાઈ મહેતાને લગ્નપ્રસંગે આશીર્વાદ આપવા સ્વામીશ્રી સારંગપુરથી ખાસ અમદાવાદ પધાર્યા હતા. આવી રીતે એક એક યુવાન માટે સ્વામીશ્રીએ પ્રેમ વરસાવ્યો છે અને ભીડો વેઠ્યો છે.

વડોદરાનો યુવક બિપીન સ્વામીશ્રી સાથે વિચરણમાં જોડાયો હતો. સ્વામીશ્રી પીપળાવમાં હતા. ઠંડી અસહ્ય હતી. તે વખતે સ્વામીશ્રીએ પોતાનું ગાદલું બિપીનને આપી દીધું હતું. સન ૧૯૭૬માં દાસજમાં સ્વામીશ્રી અને બીજા યુવકો પણ ઠંડીમાં સ્કૂલના ઓટલા પર સૂતા હતા. એ વખતે બાજુમાં થોડે દૂર બિપીન સૂતો હતો. ગાઢ ઊંઘમાં બિપીન ધીરે ધીરે સ્વામીશ્રીની પથારી ઉપર જતો રહ્યો અને સ્વામીશ્રી બિપીન માટે પથારી ખાલી કરીને નીચે ઓટલા પર સૂઈ ગયા ! આ રીતે સ્વામીશ્રીએ સૌને રાજી કર્યાં છે. તેમના પ્રેમપૂર્વકના પરિશ્રમનો એક જે હેતુ છે કે સૌને ભગવાનના માર્ગે ચડાવવાં તેમનો પરિશ્રમ જ વિકાસનું કારણ છે. ◆

(૩)

## એકાંતિક : મારું જીવન સ્વામીશ્રીના સંગે Ekantik : My Life with Swamishri

જીવન-મૂલ્યોની ઠેકડી ઉડાવીને ઉદ્દંડ અને ઉચ્છૃંખલ બનતી જતી અમેરિકાની ટીનેજર પેટી અમેરિકાના ધુરંધરો માટે ચિંતાનો સૌથી અઘરો વિષય બન્યો છે. અને બીજી તરફ એ જ ઘરતી પર કિશોર પેટીને વિશ્વવંદનીય પ્રમુખસ્વામી મહારાજ નિવ્યાજ વાત્સલ્યથી આધ્યાત્મિકતાનાં ઉન્નત મૂલ્યોથી અલંકૃત કરી રહ્યા છે. તેની એક રોમાંચક અનુભૂતિ તાજેતરમાં જુલાઈ ૪ થી ૭, ૨૦૧૩ દરમ્યાન એટલાન્ટાના બી.એ.પી.એસ. સ્વામિનારાયણ મંદિરના પરિસરમાં ‘બી.એ.પી.એસ. નેશનલ કિશોર કન્વેન્શન’ દરમ્યાન સૌને માણવા મળી. આટલી મોટી સંખ્યામાં ઉમટેલી આ કિશોર પેટીએ આધ્યાત્મિકતાના ઇતિહાસમાં એક સ્વર્ણમ પૃષ્ઠ રચી દીધું.

‘એકાંતિક : મારું જીવન સ્વામીશ્રીના સંગે’ એ વિષયવસ્તુ સાથે યોજાયેલા નોર્થ અમેરિકા બી.એ.પી.એસ. કિશોર-કિશોરી કન્વેન્શનમાં અમેરિકા, ઓસ્ટ્રેલિયા, ન્યૂઝીલેન્ડ, ઇંગ્લેન્ડથી બી.એ.પી.એસ.નાં ૩,૩૨૦ કરતાં પણ વધારે કિશોર-કિશોરીઓએ ભાગ લીધો હતો. સમગ્ર કાર્યક્રમના કેન્દ્રમાં હતો - એકાંતિક થવાનો સંદેશ.

એકાંતિક એટલે સર્વગુણ સંપન્ન એવું એક ઉચ્ચ સર્વાંગ સંપૂર્ણ જીવન. ઉચ્ચ આધ્યાત્મિક આનંદની અનુભૂતિ. ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણે શીખવેલા એકાંતિક ધર્મના પાઠ પરમ એકાંતિક સત્પુરુષ પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજના સંગે જીવનમાં કેવી રીતે આત્મસાત્ કરી શકાય ? રોજિંદા જીવનમાં એકાંતિક ધર્મ કેવી રીતે પ્રસ્તુત છે ? એવી જિજ્ઞાસા સાથે ઉમટેલાં એ હજારો ટીનેજરો એકાંતિક ધર્મના અનુભવી સંતો પાસેથી અધ્યાત્મ પાઠ શીખ્યા.

### ■ પ્રસ્તાવના

આ કન્વેન્શનનો કાર્યક્રમ ઘડવા માટે ૩ વર્ષ પહેલાં સમગ્ર નોર્થ અમેરિકામાં સત્સંગ સાથે સંલગ્ન કિશોરો અને કિશોરીઓનો એક સર્વેક્ષણ કરવામાં આવ્યો. આ સર્વેક્ષણ દ્વારા નોર્થ અમેરિકામાં રહેતાં કિશોરો અને કિશોરીઓની આ અવસ્થામાં ઘરે, સત્સંગમાં અને બહાર અનુભવાતા પ્રશ્નો અને કઠિનાઈઓનો તલસ્પર્શી અભ્યાસ કરવામાં આવ્યો. આ અભ્યાસમાં પ્રાપ્ત થયેલાં તારણોના આધારે કન્વેન્શનના અભૂતપૂર્વ આયોજને આકાર લીધો. બી.એ.પી.એસ. કિશોરપ્રવૃત્તિના કાર્યકરોએ સમગ્ર આયોજનને સફળ બનાવવા માટે કમર કસી. સ્વામીશ્રીની પ્રેરણા, પૂજ્ય સંતોનું સતત માર્ગદર્શન અને હજારો માનવકલાકોના સખત પરિશ્રમના ફળસ્વરૂપે એક સુંદર વિચારપ્રેરક કાર્યક્રમ તૈયાર થયો. અર્વાચીન કાળમાં ઉપનિષદયુગના અવતરણ સમું આ કન્વેન્શન આવનારાં વર્ષો માટે નોર્થ અમેરિકાના સત્સંગમાં મહત્વનું સીમાચિહ્ન બની રહેશે.

### ■ આગમન દિન

કન્વેન્શનના આગમન દિન તા. ૪ જુલાઈના રોજ શિબિરાર્થીઓ પધાર્યા. સૌપ્રથમ સમગ્ર શિબિરાર્થીઓને નાનાં વૃંદમાં વિભાજિત કરવામાં આવ્યા હતા, તેના વૃંદ-સંચાલકોની સભા થઈ. આ સભામાં શિસ્ત અને વર્તનનું માર્ગદર્શન અપાયું. પૂજ્ય મહંત સ્વામીએ બળપ્રેરક માર્ગદર્શન આપ્યું. પૂજ્ય અમૃતનંદન સ્વામીએ પૂર્વ આયોજનથી જ આ કન્વેન્શન સાથે પરમ પૂજ્ય સ્વામીશ્રી કેવી રીતે સંકળાયેલા છે તેના પ્રેરક પ્રસંગો કહ્યા. શ્રી જિગરભાઈ અને શ્રી કીર્તનભાઈએ વૃંદ સંચાલકને કાર્યલક્ષી માર્ગદર્શન આપ્યું.

### ■ સંધ્યાસત્ર

આગમનદિનની સંધ્યાએ મંદિરના વિશાળ પ્રાંગણમાં સંગીત રંગમંચનું આયોજન હતું, પરંતુ દેવો સૌને વધાવવા થનગનતા હતા. ઈન્દ્રદેવે વૃષ્ટિ દ્વારા સૌને વધાવ્યા એટલે રંગમંચનું સ્થાન પરિસરની હવેલીમાં અંદર લઈ જવાયું. શિબિરાર્થીઓને તથા સ્વયંસેવકોને એકાંતિક ધર્મના પાઠની શરૂઆત આગમન પૂર્વે જ અનુભવાઈ ! વિવિધ પ્રાંતના શિબિરાર્થીઓ દ્વારા ભારતીય અને પાશ્ચાત્ય વાજિંત્રોની સંગીત સૂરાવલિ વચ્ચે ભક્તિના સૂર રેલાયા. કીર્તનોની સાથે સાથે ટૂંકા સંવાદો દ્વારા કન્વેન્શનના વિષયનો પરિચય અપાયો. ભક્તિની અભિવ્યક્તિમાં અંતરની શુદ્ધતા મુખ્ય છે તેવો સંદેશ સૌને પ્રાપ્ત થયો.

ભોજન બાદ સૌ શિબિરાર્થીઓ નારાયણ સભાગૃહમાં પધાર્યા. ૩૨૦૦ જેટલા પ્રેક્ષકોને સમાવી શકે તેવા ભવ્ય સભાગૃહમાં પ્રથમ સત્રનો પ્રારંભ થયો. કન્વેન્શનના વિષય પરિચયની સાથે સમગ્ર કન્વેન્શનને એકસૂત્રતા બક્ષતા સંવાદનો આરંભ થયો. શિબિરાર્થીઓની વય અનુસાર અનુભવાતા પ્રશ્નો/મૂંઝવણોમાં સ્વામીશ્રી સાથેનું દૈનિક જોડાણ કેવી રીતે સ્થિરતા આપે છે તે તેનું હાર્દ હતું. આ સંવાદનાં પાત્રો શિબિરાર્થીઓના વયજૂથોને અનુરૂપ હતાં. સંવાદના પાત્રોએ વિવિધ પ્રશ્નોની રજૂઆત અનોખી શૈલી દ્વારા પ્રસ્તુત કર્યા. સંવાદમાં વિષયોની દઝાડતી જવાબોથી ઉદ્ભવતાં દૂષણો, મઘપાન, માંસાહાર, વિજાતીય આકર્ષણ, ટેક્સ્ટિંગ, પાશ્ચાત્ય સંગીત, વીડિયો ગેમ્સ, પોપ્યુલર કલ્ચરનું ભીષણ આક્રમણ વગેરે રજૂ થયાં. તો વળી આંતરિક પ્રશ્નો જેવા કે એકબીજાને સમજવાની સમજણનો અભાવ, સત્સંગ અને પીયર પ્રેશરમાં દ્વિધાત્મક સ્થિતિ, જનરેશન ગેપ વગેરે પણ રજૂ થયાં. પણ આ સર્વમાં પરમ એકાંતિક સત્પુરુષ પ્રમુખસ્વામી મહારાજ સાથેનું જોડાણ કેવી રીતે ઉગારે છે અને એકાંતિક ધર્મ દેઢાવે છે તેની વાત જીવંત અભિનય દ્વારા રજૂ થઈ. સંવાદનાં લાગણીસભર દૃશ્યોએ અનેક શિબિરાર્થીઓનાં હૈયાં હચમચાવી દીધાં. સૌને સંવાદનાં પાત્રો દ્વારા પોતાના પ્રશ્નોને વાચા પ્રાપ્ત થઈ હોય અને એ તમામે યથાર્થ માર્ગદર્શન મેળવ્યું હોય તેમ અનુભવાયું.

### ■ દ્વિતીય દિન : સવારનું સત્ર

દ્વિતીય દિનના સવારના સત્રના આરંભે સંવાદના દ્વિતીયમાં, પ્રશ્નોની પરાકાષ્ટામાં થતી મૂંઝવણમાં સ્વામીશ્રી હંમેશાં સાથે જ છે એવો અહેસાસ થયો. સ્વામીશ્રીએ વીડિયો-આશીર્વાદ આપ્યા તેમાં ભગવાનના દૈવ આશ્રયથી તેઓ આપણા સળગતા પ્રશ્નોમાં આપણી રક્ષા કરે છે તેમ સમજાવ્યું. સંવાદના માધ્યમથી સૌ શ્રીજીમહારાજના સમયમાં ધરમપુરનાં મહારાણી કુશળકુંવરબાના દરબારમાં પહોંચી ગયા. પૂજ્ય મહંત સ્વામી, પૂજ્ય સંતો અને હરિભક્તોએ શ્રીજીમહારાજ અને ગુણાતીતાનંદ સ્વામીને શોભાયાત્રા દ્વારા દરબારમાં પધરાવ્યા એવું આબેહૂબ દૃશ્ય ખડું કર્યું. કિશોરો અને કાર્યકરોએ મહારાજ-સ્વામીનું સ્વાગત કર્યું અને સ્મૃતિભેટ અર્પણ કરી. પૂજ્ય મહંત સ્વામી અને સંતોના ઔપચારિક સ્વાગત વચ્ચે નૃત્યો અને કીર્તનો દ્વારા સૌ ભક્તિરસમાં તરબોળ થયાં. સાથે સાથે શ્રીજીમહારાજે જીવનની વિવિધ અવસ્થાઓ જેવી કે બાલ્યાવસ્થામાં બાળ-ઘનશ્યામ સ્વરૂપે, કિશોરાવસ્થામાં નીલકંઠવર્ણી સ્વરૂપે અને સહજાનંદ સ્વામી સ્વરૂપે કરેલાં લીલાચરિત્રોનું પૂજ્ય સંતો દ્વારા વર્ણન અને કિશોરો દ્વારા તેને અનુરૂપ કીર્તનોની આકર્ષક રજૂઆત થઈ.

પૂજ્ય સ્નેહમુનિદાસ સ્વામીએ ‘એકાંતિક ધર્મ - Making it real’ વર્ગ દ્વારા એકાંતિક ધર્મ એ સાચો છે, સહેલાઈથી પાળી શકાય છે અને એને અનુભવી શકાય છે તેનું પ્રશંસનીય માર્ગદર્શન Lego બ્લોક્સના રમકડાંના દૃષ્ટાંત દ્વારા આપ્યું. ત્યારબાદ આ વર્ગને અનુરૂપ ગ્રૂપ એક્ટિવિટી અને ગોષ્ટિ માટે સૌ છૂટા પડ્યા. ગોષ્ટિના સંચાલનમાં ટેકનોલોજી અને અધ્યાત્મનું અનેક સંયોજન દૃશ્યમાન થયું. ગોષ્ટિમાં એકાંતિક ધર્મ, તેનાં વિવિધ પાસાં અને સ્વામીશ્રી સાથેનું જોડાણ એ મુદ્દાઓની ચર્ચા થઈ. સૌને સ્વામીશ્રી પ્રત્યે અત્યંત સ્નેહ છે તેથી એકાંતિક ધર્મની સિદ્ધિ આ જન્મે થશે જ તેવી દૈવતા કરાવાઈ.

સવારના સત્ર બાદ એક વિશિષ્ટ વર્ગનું આયોજન હતું, જેમાં શૈક્ષણિક ક્ષેત્રે વિદ્યાર્થીઓ શ્રેષ્ઠ કારકિર્દી બનાવે એ સ્વામીશ્રીની રુચિ છે અને તેના દ્વારા સંસ્થાની સેવા થશે તે અંગે પૂજ્ય મહંતસ્વામીએ તલસ્પર્શી માર્ગદર્શન આપ્યું.

### ■ મધ્યાહ્ન સત્ર

બપોરનું સત્ર આરંભાયું સંવાદના વધુ અંક દ્વારા, જેમાં પાત્રો હજુ મૂંઝાયેલાં છે અને પ્રશ્નોથી મુક્ત થયાં નથી, પરંતુ તે અંધકારમાં સ્વામીશ્રીનો પ્રેરણાપુંજ ઝળહળે છે તેની સુંદર રજૂઆત થઈ. ‘ધર્મ ૨.૦’ એવા શીર્ષક હેઠળના વર્ગમાં પૂજ્ય શાંતમુનિદાસ સ્વામીએ જીવનનો દષ્ટિકોણ બદલીને ધર્મની સાચા અર્થમાં દઢતા કરવા માટે માર્ગદર્શન આપતાં કહ્યું કે ધર્મ એ ધર્મ છે, કોઈ તાર્કિક સમાધાન નથી. એકાંતિક ધર્મના આ અતિ અગત્યના સ્તંભને જીવનમાં કેવી રીતે દઢ કરી શકાય તેની મનનીય રજૂઆત કરી.

વર્ગ બાદ સંવાદનાં પાત્રોએ ધર્મના માર્ગે પાછા વળવા માટે સ્વામીશ્રીનું દિવ્ય અવતરણ અનુભવ્યું. આ અવતરણને પ્રકાશમાન કરતો તૃતીય વર્ગ ‘Never walk Alone’ પૂજ્ય આનંદસ્વરૂપદાસ સ્વામીએ રજૂ કર્યો. આ વર્ગમાં ભગવાન અને સત્પુરુષ સદાય આપણી સાથે છે, સદાય આપણી સંભાળ લે છે અને એમની જેટલી સ્મૃતિ કરીશું એટલી વધારે અનુભૂતિ, આનંદ, ઉત્સાહ અને કેફ પ્રાપ્ત થશે તેવું અદ્ભુત માર્ગદર્શન શિબિરાર્થીઓએ પ્રાપ્ત કર્યું. સંવાદના કમિક અંકમાં બધાં પાત્રો સ્વામીશ્રીના સહારે પાછા એકાંતિક ધર્મના માર્ગે ચાલવાની શરૂઆત કરે છે તેવાં દર્શ્યો રજૂ થયાં.

વર્ગ બે અને ત્રણ તેમજ સંવાદમાં રજૂ થયેલા મુદ્દાઓના આધારે શિબિરાર્થીઓ પુનઃ ગ્રૂપ એક્ટિવિટીમાં જોડાયા. આ ગોષ્ઠિ દરમ્યાન સ્વામીશ્રીનું સતત સાંનિધ્ય કેવી રીતે એકાંતિક ધર્મના માર્ગે સહાય કરે છે તેના પાઠની દઢતા શિબિરાર્થીઓએ કરી. તાલીમબદ્ધ વૃંદ સંચાલક દ્વારા તૈયાર કરવામાં આવેલ અભ્યાસક્રમ મુજબ ગોષ્ઠિનું સફળ સંચાલન થયું.

### ■ સંધ્યાસત્ર

દ્વિતીય દિનનું સાંજનું સત્ર સંવાદના આગળના અંક દ્વારા શરૂ થયું. સંવાદમાં પાત્રો તરીકે પૂજ્ય સંતો અને વડીલ સત્સંગી હરિભક્તનો પ્રવેશ થયો. વડીલ હરિભક્ત શ્રી યજ્ઞેશભાઈએ સ્વામીશ્રી સાથેનું જોડાણ ભૌતિક દષ્ટિએ પણ સફળતાની માસ્ટર કી છે અને કપરા સમયમાં પણ એ જોડાણ દ્વારા જ પાર ઊતરી શકાય છે - તે પોતાના સ્વાનુભવના પ્રસંગો દ્વારા દર્શાવ્યું. પૂજ્ય મંગલનિધિદાસ સ્વામીએ પ્રેરક પ્રસંગો વર્ણવીને વ્યસનો વિનાશના માર્ગે લઈ જાય છે અને વ્યાવસાયિક જીવનમાં વ્યસનીઓના ‘કનેક્શન’ વિના પણ સર્વોચ્ચ સફળતા મેળવી શકાય છે તેનું વિચારપ્રેરક માર્ગદર્શન આપ્યું. પૂજ્ય અનંતમંગલદાસ સ્વામીએ પિતા-પુત્રના સંબંધો અને જનરેશન ગેપ દ્વારા ઊભા થતા પ્રશ્નો એ સ્વામીશ્રી સાથેના જોડાણની સમજણ દ્વારા કેવી રીતે ઉકેલી શકાય છે તે સ્વાનુભવોના આધારે સમજાવ્યું. સાથે સાથે સત્સંગમાં સેવાનું મહત્ત્વ પણ સમજાવ્યું.

ત્યારબાદ સ્વામીશ્રીએ નોર્થ અમેરિકામાં ૧૯૭૭માં અને તે પછી કરેલા અત્યંત કષ્ટદાયક વિચરણ દરમ્યાન વહાવેલી કરુણાગંગાને ૨૭૦ ડિગ્રીને આવરતા ચિત્રપટ પર દર્શાવવામાં આવી. સાથે સાથે ૧૯૮૧માં થયેલ કલ્ચરલ ફેસ્ટિવલ ઓફ ઈન્ડિયામાં સેવાથી થયેલાં પરિવર્તનો હરિભક્તોના સ્વમુખે રજૂ થયાં. આ ઉત્સવની પુનઃ સ્મૃતિ કરાવતાં નૃત્યોની રજૂઆત થઈ. જેમાં શિબિરાર્થીઓનાં હૈયાં હિલોળે યદ્વાં.

સ્વામીશ્રી સાથેના જોડાણના વિચાર દ્વારા કુટુંબ અને સત્સંગીમાં સંવાદિતા લાવી શકાય છે તે અંગે તેમજ ઘરસભા વિષયક માર્ગદર્શન પૂજ્ય મુનિતિલકદાસ સ્વામીએ આપ્યું.

### ■ તૃતીય દિન : સવારનું સત્ર

કન્વેન્શનનો તૃતીય દિન આરંભાયો ભક્તિની એક વિશિષ્ટ અભિવ્યક્તિ દ્વારા. પૂજ્ય સંતોએ બધા જ કિશોરોને ભાલ ઉપર ચંદનની અર્યા કરી અને સ્વામીશ્રીના સંગે બ્રાહ્મીસ્થિતિ મેળવવાના માર્ગે આગળ વધવા યજ્ઞોપવીત આપી. સૌ કિશોરીઓને વડીલ બહેનો દ્વારા કંઠી આપવામાં આવી. આરતી બાદ સભાગૃહમાં સ્વામીશ્રીના જન્મસ્થાન ચાણસદનું નયનરમ્ય દર્શ્ય રચાયું. દર્શ્ય, શ્રાવ્ય અને પ્રત્યક્ષ માધ્યમોની ત્રિવેણી રચાઈ. સંવાદનાં પાત્રો સ્વામીશ્રીના બાલ્યાવસ્થાના સમયમાં તીર્થભૂમિ ચાણસદ પહોંચ્યા. ત્યાં સ્વામીશ્રીના મિત્ર શાંતિલાલ દ્વારા સ્વામીશ્રીના એક કિશોર તરીકેના પ્રસંગો સાંભળ્યા. તો વળી, સ્વામીશ્રી બ્રહ્મસ્વરૂપ શાસ્ત્રીજી મહારાજની રુચિમાં સહજતાથી ભળી ગયા તે પ્રસંગ યોગીજી મહારાજના સ્વમુખે શ્રાવ્ય માધ્યમ દ્વારા પ્રસ્તુત થયો. સ્વામીશ્રીના સ્વમુખે ગૃહત્યાગ કરીને નીકળ્યા તે પ્રસંગો સૌએ માણ્યા. મંચ ઉપર કીર્તનના તાલે ચિત્રપટ ઉપર આંબલીવાળી પોળ દર્શ્યમાન થઈ, જ્યાં સ્વામીશ્રીએ પાર્ષદી દીક્ષા ગ્રહણ કરી હતી.

કાર્યક્રમને આગળ ધપાવતાં સંવાદમાં, પ્રસંગ પ્રવક્તા તરીકેનું સ્થાન સ્વામીશ્રીના સખા હરજીવનદાસ કોઠારીએ લીધું. તેમણે ગોંડલ ખાતે ભાગવતી દીક્ષા પૂર્વેનો પ્રસંગ, બ્રહ્મસ્વરૂપ શાસ્ત્રીજી મહારાજ પ્રત્યેનો સ્વામીશ્રીનો ગાઢ સ્નેહ અને સ્વામીશ્રીની સરળતા વર્ણવ્યાં. સ્વામીશ્રીના દીક્ષા પ્રસંગનું ઐતિહાસિક દર્શ્ય મંચ ઉપર રચાયું. દીક્ષાપ્રસંગનો ઉલ્લાસ નૃત્ય અને રાસની રમઝટ દ્વારા અભિવ્યક્ત થયો અને તાજેતરમાં જ અમદાવાદ મંદિરમાં સ્વામીશ્રીના દીક્ષાદિનની ઉજવણીની વીડિયો દર્શાવાઈ.

ઉલ્લાસનું દર્શ્ય હવે કષ્ટોના દર્શ્યમાં રૂપાંતર પામ્યું. ૨૩-૨૪ વર્ષની ઉંમરે સ્વામીશ્રી સારંગપુર મંદિરના કોઠારી બન્યા તે સમયે તેમણે વેઠેલાં કષ્ટો તેમજ બ્રહ્મસ્વરૂપ શાસ્ત્રીજી મહારાજે દર્શાવેલ અતૂટ વિશ્વાસના પ્રસંગો દર્શાવાયા. સ્વામીશ્રીના સ્વમુખે આ પ્રસંગોનું શિબિરાર્થીઓએ આચમન કર્યું અને ધન્યતા અનુભવી. આ સમગ્ર સત્ર દ્વારા સ્વામીશ્રી પોતાનું ગમતું મૂકીને, કષ્ટો વેઠીને પોતાના ગુરુની આજ્ઞા અને રુચિમાં ભળી ગયા તેથી મહાનતા પ્રાપ્ત કરી શક્યા - એવો પાયાનો સંદેશ પ્રાપ્ત થયો.

સવારના સત્રના અંતમાં પૂજ્ય મહંત સ્વામીએ ‘જેવા મેં નીરખ્યા રે’ એ વિષય ઉપર પ્રેરણાસભર પ્રવચન આપ્યું. સત્પુરુષની રુચિમાં ભળવાથી થયેલી પ્રાપ્તિનું પ્રેરણાપ્રદ બયાન આપીને તેમણે સૌ શિબિરાર્થીઓને એકાંતિક ધર્મ સિદ્ધ થવાના માર્ગે કૃતનિશ્ચય કર્યાં.

### ■ મધ્યાહ્ન સત્ર

બપોરના સત્રનો પ્રારંભ સંવાદના છેલ્લા અંક દ્વારા થયો. સંવાદનાં પાત્રોમાં હજી પણ ઊંડે ઊંડે એકાંતિક ધર્મપાલન અને સત્પુરુષની રુચિમાં ભળવામાં સંશય દેખાતો હતો. આ સંશયનું સમાધાન કરવા માટે પૂજ્ય આનંદસ્વરૂપદાસ સ્વામીએ પાંચમો વર્ગ 'સંશયાત્મા વિનશ્યતિ' શરૂ કર્યો. વર્ગના પ્રારંભમાં જ સ્વામીશ્રી સાથે સારંગપુર ખાતેથી સ્વામીશ્રીના લાઈવ આશીર્વાદ પ્રાપ્ત થયા. સ્વામીશ્રીના આ પ્રત્યક્ષ આશીર્વાદથી સૌ ધન્ય થઈ ગયા.

પૂજ્ય આનંદસ્વરૂપદાસ સ્વામીએ સંશયથી પ્રગટતો વિરોધાભાસ અને માનસિક દ્વંદ્વ સમજાવ્યાં. ત્યારબાદ સંશયને બાજુ પર મૂકી સ્વામીશ્રીની આજ્ઞા અને રુચિમાં ભળીને રાજીપો રળેલા હરિભક્તો-સંતોના પ્રસંગો દ્વારા શંકા-નિવારણ કર્યું.

સંવાદના અંતિમ અંકમાં આગળ વધતાં સંવાદનાં પાત્રો મૂંઝવણમાંથી બહાર આવતાં જણાયાં અને સ્વામીશ્રી પ્રત્યે અંતરમાં ઘુપાયેલો ઊંડો પ્રેમ બહાર આવતો અનુભવાયો. આ જ વિષયને આગળ વધારતાં અંતિમ અને છઠ્ઠા વર્ગમાં પૂજ્ય આનંદસ્વરૂપદાસ સ્વામીએ 'True Love' અર્થાત્ 'સાચો પ્રેમ' વિષે અદ્ભુત માર્ગદર્શન આપ્યું. પ્રેમની અપેક્ષા સૌને છે, પ્રેમ સૌ કોઈ કરે છે પણ સત્પુરુષનો પ્રેમ અલૌકિક છે. તેનાં વિવિધ પાસાંઓ પ્રસંગો અને દૃષ્ટાંતો દ્વારા સમજાવ્યાં. આ વર્ગના સંદેશને અંતરમાં દટ કરવા સ્વામીશ્રીનાં આશીર્વચન રજૂ થયાં. આ સાથે સંવાદનો અંતિમ અંક પણ પૂરો થયો અને સૌ પાત્રો સ્વામીશ્રીની રુચિમાં ભળી જઈ, એકાંતિક ધર્મ સિદ્ધ કરી, સ્વામીશ્રીનો અખંડ રાજીપો મેળવવા માટે કૃતનિશ્ચય બન્યા. સમગ્ર સંવાદના વિવિધ અંકોની રજૂઆત દરમ્યાન સૌ શિબિરાર્થીઓએ તેનાં પાત્રો સાથે એકાત્મતા અનુભવી.

છેલ્લે, અંતિમ બે વર્ગો માટે એક ગ્રૂપ એક્ટિવિટી થઈ જેમાં સંશયમુક્ત થવા માટે અને સ્વામીશ્રી પ્રત્યેના પ્રેમને દૃઢિભૂત કરવા માટે પ્રશ્નોત્તરી અને ગોષ્ઠિ થયાં.

### ■ સંધ્યા સત્ર

કન્વેન્શનનું અંતિમ સત્ર મંદિરના પ્રાંગણમાં આયોજિત કરવામાં આવ્યું હતું, જેમાં એટલાન્ટા મંદિરમાં સૌપ્રથમવાર મહાઆરતીનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું. કુદરતના ખોળે મંદિરનાં દર્શન કરતાં કરતાં આ સત્ર થવાનું હતું. સૌ શિબિરાર્થીઓએ અને પૂજ્ય સંતોએ પોતાનાં સ્થાન ગ્રહણ કરી લીધાં હતાં. ત્યાં જ મહાઆરતીનું સ્થાન મહાઅભિષેકે લીધું. ધોધમાર વરસાદ અને સાથે પવન ફૂંકાયો. સૌ કોઈ પલળી ગયા. એમ લાગ્યું કે ખેલ ખતમ થઈ ગયો. પણ કન્વેન્શનમાં મેળવેલ જ્ઞાન અને ભક્તિ એળે નહોતાં જવાનાં. સૌને અંતરમાં સ્વામીશ્રીએ જાણે હેત વર્ષાવ્યું હોય તેમ અનુભવાયું અને વરસાદ બંધ થતાં જ ફરીથી કાર્યક્રમ શરૂ કરવા સૌ કોઈ કાર્યરત થયાં. થોડા વિરામ પછી સૌ પાછા સ્થાન ઉપર ગોઠવાઈ ગયા અને કાર્યક્રમ શરૂ થયો. પૂજ્ય મહંત સ્વામીએ અંતિમ આશીર્વચનમાં પોતાના અંતરતલના વિચારોને વાચા આપતાં કહ્યું કે આ અભિષેક સ્વામીબાપાએ જ કર્યો છે. આપણી ખરી કસોટી થઈ પણ આપણે સૌ સ્વસ્થ રહ્યા એ જ આ કન્વેન્શનની ફળશ્રુતિ દર્શાવે છે, આ જ આપણી કન્વેન્શનની સફળતા દર્શાવે છે, અને આ જ દર્શાવે છે કે આપણે આ માર્ગે ચાલવા કૃતનિશ્ચય થયા છીએ. સાથે સાથે એકાંતિક ધર્મ સિદ્ધ કરવા સ્વામીશ્રી પ્રત્યે દૃઢ પ્રીતિ થાય અને એમનો રાજીપો પ્રાપ્ત થાય એવા પુનિત આશીર્વાદ આપ્યા.

પૂજ્ય મહંત સ્વામીએ એક વિશેષ જાહેરાત કરતાં જયનાદમાં સ્વામીશ્રીના હૃદયના સંકલ્પ એવા ન્યુજર્સીમાં બંધાઈ રહેલા અક્ષરધામની જય - 'અક્ષરધામ મહોત્સવની જય' ઉમેરવા માટે આજ્ઞા કરી. ત્યારબાદ અમૃતનંદનદાસ સ્વામીએ કન્વેન્શનની સફળતા પાછળ સતત કારણભૂત સ્વામીશ્રીની સંનિધિનાં ઉદાહરણો આપ્યાં. અને કન્વેન્શનનો અંતિમ સંદેશ પુનરાવર્તિત કર્યો. ત્યારબાદ સ્વામીશ્રીનાં આશીર્વચન પ્રસારિત થયાં, જે શિબિરાર્થીઓની પ્રાર્થનાથી સંપન્ન થયાં. અંતિમ દિનના અંતિમ કાર્યક્રમનો અંત મંદિરનાં શિખરો પર સંગીત સાથે સંકલિત લાઈટ શો અને ફાયરવર્ક્સ દ્વારા થયો. સૌ શિબિરાર્થીઓને આ કન્વેન્શન જીવનનું અમૂલ્ય સંભારણું અને પથદર્શક બની રહેશે. ◆